

उत्तराखण्ड में जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

चर्चा में क्यों?

वर्षाज्जों के अनुसार, उत्तराखण्ड में हुई **भारी वर्षा बादल फटने** के कारण नहीं हुई, बल्कि यह **जलवायु परिवर्तन** के प्रभाव को दर्शाती है, जो **भारतीय हिमालय** की ऐसी तीव्र वर्षा के लिये तैयारियों की कमी को उजागर करती है।

मुख्य बढि

- रुद्रप्रयाग, देहरादून, पौड़ी और टहिरि गढवाल जिलों में भारी वर्षा के कारण जान-माल के नुकसान की खबर है।
- **भारतीय मौसम वजिज्ञान वभिग (IMD)** के मौसम वजिज्ञानी के अनुसार, 'बादल फटना' एक घंटे में 100 ममी. से अधिक वर्षा को कहा जाता है।
 - इस मामले में केदारनाथ में बादल नहीं फटा, लेकिन नैनीताल और देहरादून में एक घंटे में 50 ममी. से अधिक तथा सोनप्रयाग में एक घंटे में 30 ममी. से अधिक बारशि दर्ज की गई।
- उच्च पर्वतीय क्षेत्रों की **संवेदनशील भू-आकृति** वजिज्ञान संबंधी स्थितियों के कारण **कम वर्षा भी अधिक नुकसान** पहुँचाती है।
 - **भूस्खलन** तीव्र ढलान, भूमि के आकार और मृदा की प्रकृति के कारण होता है, जिससे व्यापक क्षर्ता होती है।
- भूगर्भीय दृष्टि से युवा हिमालय पर्वतमाला भारी वर्षा के लिये नहीं बनी है तथा **जलवायु परिवर्तन** के कारण पर्वतों में गर्मी एवं वर्षा दोनों की तीव्रता बढ रही है।

भूस्खलन

- भूस्खलन को **चट्टान, मलबे या मृदा के द्रव्यमान का ढलान से नीचे खसिकना** कहा जाता है।
- यह एक प्रकार का **सामूहिक कषय (Mass Wasting)** है, जो गुरुत्वाकर्षण के प्रत्यक्ष प्रभाव के तहत मृदा और चट्टान के नीचे की ओर होने वाले किसी भी प्रकार के संचलन को दर्शाता है।
- भूस्खलन शब्द में ढलान संचलन के पाँच तरीके शामिल हैं: गरिना (Fall), लटकना (Topple), फसिलना (Slide), फैलाव (Spread) और प्रवाह (Flow)।